अभिमन्यु अनत की कहानियों में प्रवासियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

सीमा दास (शोधार्थी)
डॉ.सीमा चंद्रन (शोध-निर्देशिका)

समाजशास्त्र, समाज में निहित मानवीय संबंधों का क्रियांवित तथा क्रमवत तरीके से विविध वैज्ञानिक पद्धतियों के आधार पर अध्ययन करता है । इसका संबंध समाज में रहने वाले व्यक्तियों से तथा उसके प्रत्येक क्रिया-कलाप के अलावा विविध गतिविधियों से संबंध स्थापित करता है । यानि समाजशास्त्र समाज की तमाम परिस्थितियों एवं समस्याओं का अध्ययन करता है तथा उससे संबंध स्थापित करता है । एक तरह से कहा जाए तो, सामाजिक संरचना, विविध सामाजिक घटकों का विश्लेषण कर नई व्याख्या प्रस्तुत करता है । इस प्रकार समाजशास्त्र को परिभाषित व व्याख्यायित करते समय समाज का पूरा खाँका हमारी आँखों के सामने आ खड़ा होता है ।

समाजशास्त्रीय अध्ययन के माध्यम से जब साहित्य का आंकलन किया जाता है तब ऐसी परिस्थितियों में बिना मूल समस्या के साहित्य का दिशा निर्धारित करना अत्यंत कठिन है । याँ यूँ कहा जाए सामाजिक गतिविधियों को जाने बगैर उस साहित्य का मूल्य स्थापित करना तथा समय की परिपाटी में ढालना गम्भीर समस्या है । सामान्यतया कहानी का समाजशास्त्रीय अध्ययन करते समय सामाजिक वाह्य गतिविधियों एवं परम्पराओं के अलवा आत्मानुभूतियों को भी प्रयोग में लाया जा सकता है । रचनाकार अपनी रचनाओं में सामाजिक परिवेश तथा उसमें रह रहे व्यक्तियों के जीवन की क्रिया-कलापों का वर्णन विस्तारपूर्वक करता है क्योंकि किसी भी रचना का संबंध समाज से होता है तथा समाज में रह रहे व्यक्तियों एवं प्राणियों तथा जीव-जन्तुओं से होता है ।

पारिवारिक छोटी-छोटी इकाईयों को तथा एक से अधिक लोगों तथा कई जन-समूह को मिलाकर बने वृहतम इकाई को समाज कहते हैं । जिसका संबंध समाज में रहने वाले मानवीय क्रियाकलापों से समिल्लित होकर एक-दूसरे के प्रति स्नेह भाव रखते हुए सभी समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाता है तथा विविध संस्कृतियों का पालन कर सामाजिक मूल्य-भावों को स्थापित करता है । प्रसिद्द विद्वान मैकक्क्वार के अनुसार- **“समाज का संबंध मानव के पारस्परिक स्वैच्छिक संबंध से नहीं है ।”1** यानि समाज किसी वर्ग विशिष्ट के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए नहीं है, अपितु मानव जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं के लिए बनाया गया है । जबकि समाजशास्त्र के संबंध में पाश्चात्य विद्वान मोरिस गिन्स्वर्ग का कहना है कि **“समाजशास्त्र मानवीय अंत:क्रियाओं**

और अंत:संबंधों, उनकी दशाओं और परिणामों का अध्ययन है ।"2 अर्थात् समाजशास्त्र, मानवीय गुणों एवं उसके संबंधों के बीच समन्वय रखता है ।

अभिमन्यु अनत की कहानियों पर विचार करने के दरमियान ध्यान रखना जरुरी है कि इनकी कहानियों में दो विविध परिवेश, वातावरण तथा द्वन्द्वात्मक संस्कृतियों का उत्थान हुआ है । इनकी कहानियाँ में गोर सरदारों यानि ब्रिटिश लोगों की नीति का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है । साथ-ही-साथ इनकी कहानी की विषयवस्तु दो विपरीत समाज यानि प्रवासी समाज तथा भारतीय समाज के पारम्परिक मूल्यों का वर्णन कर उसके साथ तादात्म्य स्थापित करने का प्रयास किया गया है । मानव का समाज से सीधा संबंध होने के चलते उस समाज में रहने वाले व्यक्तियों की समस्या मुख्यरूप से समाज की समस्या है ।

अभिमन्यु अनत ने डॉ. सतीश चंद्र अग्रवाल को दिए अपने एक साक्षात्कार में कहा है कि **"भारत में कुछ लोग हैं जो मेरी तुलना करते हैं निराला जी या प्रेमचंद से, किन्तु मैं सोचता हूँ जहाँ तक मेरी पहचान है, मैं अभिमन्यु अनत ही हूँ। सत्य तो यह है कि मेरे ऊपर जो सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है, वह किसी साहित्यकार का नहीं, वरन् मॉरिशस के जन-जीवन का है। मैं खुद मजदूर रहा हूँ। खुद हाथ में गंडासा लेकर गन्ने काटे हैं, मजदूरी की है-यहाँ तक पहुँचने के लिए। मैंने गरीबी, अभाव, शोषण को बड़ी नजदीकी से देखा है और यहीं से मेरी प्रतिबद्धता शुरू हुई। यहीं से प्रभाव आना शुरू हुआ, क्योंकि जो शोषण मैंने देखा इस देश में मजदूरों का-उसे मैंने अपने भीतर एक बहुत बड़े घाव की तरह पकते पाया और जब देखा कि वह पक गया है तो उसे तोड़ देने के लिए-उससे मुक्त होने के लिए अभिव्यक्ति शुरू की।"**3 अतः कह सकते हैं कि उनका यही अनुभव उनकी कहानियों में झलकता है।

मौरिशसीय साहित्यकार अभिमन्यु अनत ने उन समस्याओं का समाजशास्त्रीय ढंग से अपनी रचनाओं में उकेरा है । तथा प्रवासियों तथा गिरमिटिया मजदूरों का समाजशास्त्रीय अध्ययन कर उनके जीवन के विविध आयाम का पता सहजता पूर्वक लगाया जा सकता है । इनकी प्रथम कहानी अभिमन्यु अनत कृत 'खामोशी की चीत्कार' प्रवासी मजदूरों की पीड़ा पर केंद्रित यह उनकी प्रथम एवं सारगर्भित चर्चित कहानी-संग्रह है । इसके अंतर्गत कुल 13 कहानियाँ है- 'माथे का टिका', 'ख़ामोशी की चीत्कार', 'स्वर्ग के उस पार', 'वापसी सूरज की', 'कोलाहल', 'नयी तलाश', 'मुसाफिर', 'दुविधा', 'अस्वीकार', 'जहर और दवा', 'धमाका', 'सुलह' और, 'रात की पार्टी के बाद' ।

'ख़ामोशी की चीत्कार' के अंतर्गत निहित समस्त कहानियाँ प्रवासी भारतीय मजदूरों के जीवन की सच्ची एवं यथार्थपरक भयावह दास्ताँ है । इस कहानी संग्रह के अंतर्गत भारतीय एवं प्रवासी

समाज की कशमकश भी जीवन-यापन कर रहे भारतवंशियों के जीवन की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक गतिविधियों के बखान होने के साथ-ही-साथ स्त्री जीवन की दारुनिक कथा है ।

1. वर्ण व्यवस्था के आधार पर-

'माथे का टिका' कहानी के माध्यम से समाज में वाले ठेकेदारों एवं धनाढ्य व पूंजीपतियों के खोखले मानसिकता पर करार व्यंग साधा है । समाज की बनी बनायीं वर्ग-व्यवस्था की ताकियानुसी सोच व्यक्ति का कभी पीछा नहीं छोड़ता । वहीँ वर्ग भेद, धर्म और जाति व आर्थिक संपन्नता के आधार पर व्यक्ति का मूल्यांकन करने की प्रवृति बनी-बनाई परम्पराओं के अनुकूल है, जिससे व्यक्ति चाह कर भी निकल नहीं पाता । जैसा कि सुदान की माँ उससे कहा करती थी- **"बीस वर्ष के लड़के हो तुम ! तुम्हारी उमिर का कोई भी लड़का इस गाँव में तुम जैसा निख्ट्टू न होगा । पुजारीजी के लड़के को देखो, उमिर में वह तुमसे कुछ महीनों का छोटा ही होगा पर वह कुछ बन बैठा है , एक तुम हो !"**4 सुदान अपनी माँ की बात को सुन कर इसलिए चुप रहता था क्योंकि वह भली-भांति जनता था कि **"पुजारी का लड़का अच्छे खानदान से, अच्छे जाति और अच्छे भाग्य वाला ठहरा । सुदान की अपनी पीठ पर किसका हाथ था ? वह तो न किसी का भतीजा था और न किसी का परिवार"5**

इस प्रकार देखा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत ने व्यक्तिक जीवन की विसंगतियों को एवं सामाजिक वर्ण-व्यवस्था की समस्या किस प्रकार व्यक्ति की मानसिकता पर हावी था इसका अंदाजा लगाया जा सकता है । समय बदला, परिस्थितियाँ बदली लेकिन सामाजिक समस्याएं अब भी प्रवासी हो अथवा भारतीय समाज ही क्यों न विविध परिवेश में समस्याओं का स्वरूप बदल गया है, परन्तु कहीं न कहीं आज भी ऐसी कई सामाजिक समस्याएं है जो कि किसी-न-किसी रूप में दिखाई देती है ।

2. वैयक्तिक मानसिकता के आधार पर-

जिसे हम भव्य समाज एवं सुसभ्य समाज की परिभाषा देते है , ऐसे ही समाज में स्त्री को एक और माँ, बेटी, पत्नी का दर्जा दिया जाता है और स्त्री के यदि हाव-भाव अलग दिख रहे हो तो ऐसे में उस स्त्री को रिझाने वाली, पतिता, वैश्या आदि नामों से संबोधन किया जाता है । सुदान अपने अन्य दो मित्रों के साथ टमाटर की खेत पर पहुँचने वाला होता है पर वह जिस बात से अंजान होता है वह यह कि **"सुमिया गाँव की सबसे चरित्रहीन औरत थी फिर भी उसका खेत गाँव के सभी खेतों से अधिक हरा भरा था । गाँव में किसी ने भी उससे कम मेहनत न की होगी फिर भी भगवान सुमिया**

पर इतना उदार क्यों ?"6 व्यक्ति अपने समाज में रहकर उस समाज की ताकियानुसी, परम्परावादी मानसिकता से कभी नहीं उभर पाता तभी तो यदि कुछ अनहोनी हो जाए अथवा किसी का बुरा हो जाए तो ऐसे में विशेषकर ऐसे व्यक्ति विशेष का नाम उभर कर आता है जो कि सबकी नजरों में गिरा हुआ है या उसके नाम के पीछे कोई किस्सा या घटना छुपा हो।

ठीक यही कारण रहा कि धनवा का खेत हल्की पाला(ठंड या जाड़ा) पड़ने पर मर जाने पर सुदान अपनी माँ से कहते हुए सुना था कि **"धनवा की नीयत कभी अच्छी नहीं होती, यही कारण था कि उसकी इतनी बड़ी हानि हुई थी ।"**7 लेकिन वहीँ दूसरी ओर सुमिया का खेत को लहलहाते यानि हरा-भरा देखकर सुदान मन-ही-मन कहता है- **"आखिर सुमिया ने कौन सा ऐसा नेक काम किया है जिससे उसकी जमीन सोना उगल रही है ।"8**

'माथे का टीका' कहानी में धर्म के ठेकेदारों के खोखले जीवन पर व्यंग्य किया गया है। जो पुजारी दिन मे माथे पर टीका लगाकर पूजा-पाठ करते हैं, वो ही रात में चोरी-छिपे वेश्याओं के घर से बाहर निकलते दिखाई पड़ते हैं। इसके अलावा **'कोलाहल'** कहानी में राजनीतिक खोखलेपन के साथ-ही-साथ राजनेताओं की घटिया नीति को भी उजागर किया गया है। एक ओर जहाँ समाज में दरिद्रता फैली है, आम आदमी भूखा मर रहा है, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार उसकी कमर तोड़े हुए हैं, वहीं दूसरी ओर मॉरिशस की आजादी की तीसरी वर्षगाँठ पर हजारों रुपये खर्च किए जा रहे हैं। वास्तव में आम आदमियों के लिए ऐसी आजादी का क्या फायदा जब उन्हें भरपेट भोजन तक उपलब्ध ना हो। वस्तुत: हम देखा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत ने अपनी कहानियों में प्रवासी समाज में रह रहे व्यक्तियों के माध्यम से भारतवंशी की दशा अभिव्यक्त किया है । साथ अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रवासी समाज में रह रहे व्यक्तियों के रहन-सहन, आचार-विचार, मानसिकता आदि का समाजशास्त्रीय अध्ययन के माध्यम से पाठकों को सामाजिक यथार्थ रूप से अवगत कराने की कोशिश करते हैं।

3. पौराणिक कथाओं के आधार पर-

'इंसान और मशीन' अभिमन्यु अनत की दूसरी कहानी संग्रह है जो कि सन् 1976 ई. में प्रकाशित हुआ। इस कहानी-संग्रह में लघु-कथाएँ संगृहीत की गयी है। इन लघु-कथाओं में मॉरिशस की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विसंगतियों को उजागर किया गया है। आधुनिक जीवन ने मनुष्य को भीतर से अविकसित, अमानवीय तथा अविवेकी बना दिया है, इसका जीवंत चित्रण लेखक ने इन लघु-कथाओं में करने की पूरी कोशिश की है। लेखक ने ऐतिहासिक एवं पौरोणिक पात्रों जैसे- एकलव्य, नचिकेता, यमराज, विदुर, कर्ण, शकुनि आदि को लेकर आधुनिक जीवन पर व्यंग्य किया है। जहाँ उपनिषद् का नचिकेता यमराज से मृत्यु का रहस्य जान लेता है, वहीं **'नचिकेता'** कहानी का

नचिकेता (मतदाता), यमराज (नेता) से जीवन का रहस्य जान पाने के लिए प्रतीक्षारत ही बना रह जाता है। इस प्रकार अभिमन्यु अनत ने पौराणिक पात्रों द्वारा आधुनिक मानव की समस्याओं को मुखर करने की कोशिश की हैं। इस प्रकार देखा जा सकता है कि इस कहानी में आगन्तुक कला-कृतियों पर जोर दिया गया है । साथ ही पौराणिक तथ्यों को कहानी का मुख केंद्रबिंदु के रूप में प्रयोग किया है है, जो कि कथा की विषयवस्तु है ।

अभिमन्यु अनत का तीसरा कहानी-संग्रह **'वह बीच का आदमी'** है, जो कि सन् 1981 में प्रकाशित हुआ। इसमें अठारह कहानियाँ संगृहित हैं। इस कहानी-संग्रह में मजदूरों, किसानों, स्त्रियों, युवाओं आदि की समस्याओं को मुखर रूप से उठाया गया है। इस कहानी संग्रह में प्रवासियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन की दृष्टिकोण के माध्यम अभिमन्यु अनत कहते हैं कि **"जिसमें समाज की आवाज सुनाई दे, वहीं सार्थक रचना है। आदर्श आवश्यक है, लेकिन रचनाकार को यथार्थ को भी पूरा महत्त्व देना चाहिए।"9** इस प्रकार देखा जा सकता है की समाजशास्त्रीय परिदृश्य से संबंधित यह वाक्य उनकी कहानियों पर पूर्णतः सार्थक सिद्ध होता है।

4. सामाजिक विसंगतियों के आधार पर-

'वह बीच का आदमी' कहानी संग्रह में संकलित **'नींद के बाद'** नामक कहानी का नायक परंपरागत खेती का कार्य छोड़कर बेकरी की दुकान में नौकरी कर लेता है। लेकिन आर्थिक उन्नति न होते हुए देख, वापस खेती का कार्य करने लगता है। वहीं 'गोली की आवाज' कहानी मजदूरों के जीवन पर आधारित है। इसमें गोरे मालिकों द्वारा किए जा रहे मजदूरों के उत्पीड़िन को उद्घाटित किया गया है। 'कल से खेतों में', 'नीम की छाया में लड़की', 'उस दिन का वह भारी बोझ' कहानियों में स्त्री-जीवन की विसंगतियों को उठाया गया है। 'कल से खेतों में' कहानी में गरीबी से ग्रस्त परिवार की तीन बेटियों के विवाह की समस्या को दिखाया गया है। **'नीम की छाया में लड़की'** कहानी में बदसूरत लड़की के विवाह न होने की समस्या है। इनके अतिरिक्त **'उस दिन का वह भारी बोझ'** कहानी में आधुनिक परिवार अपनी लड़की शिरीन को सौंदर्य प्रतियोगिता में तो भाग लेने देता है, लेकिन राज नाम के लड़के से अंर्तजातिय विवाह नहीं करने देता। कहानी का अंत लेखक ने राज द्वारा शिरीन से पूछे गए एक प्रश्न पर किया है- **'कुमारी शिरीन, क्या आपने अपनी इस छोटी उम्र में कभी किसी को प्यार किया है?'**10 यह स्त्री जीवन की कैसी विडम्बना है कि चाहे लड़की गरीब हो या अमीर, सुंदर हो या बदसूरत उसे समाज और परिवार द्वारा प्रताड़ित किया ही जाता है।

5. सांस्कृतिक मान्यताओं के आधार पर-

अभिमन्यु अनत का चौथा कहानी-संग्रह 'एक थाली समंदर' है, जो सन् 1987 में प्रकाशित हुआ। इसमें चौबीस कहानियाँ संगृहित की गई हैं। यह कहानी संग्रह प्रवासियों के दंश की गाथा को

चित्रित करती है । इस कहानी-संग्रह की कुछ कहानियाँ जैसे-नयी तलाश, आवाज, मान-रक्षा आदि पहले के कहानी-संग्रह में भी प्रकाशित हो चुकी हैं। इस कहानी-संग्रह में भी मॉरिशस के जन-जीवन को चित्रित किया गया है। पाठक इन कहानियों को पढ़कर भाव-विभोर तो होता ही है साथ ही सोचने पर भी मजबूर हो जाता है। गौरतलब बात यह है कि अभिमन्यु अनत की कहानियों के सभी पात्र प्रेम, घृणा, द्वेष, स्वाभिमान, क्रोध, मैत्री, ईर्ष्या आदि भावों से परिपूर्ण हैं। वे स्वयं भी कहते हैं कि **"मेरी कहानी का कोई ऐसा पात्र नहीं है जिसमें मैं न हूँ। मैं एक माँ की तरह अपने हरेक पात्र को स्नेह करता हूँ।''11** इस कहानी-संग्रह की कहानी 'भीतर आना मना है' में ऊँचे पद पर आसीन व्यक्ति के चरित्र को चित्रित किया गया है। इसमें बोस द्वारा स्त्रियों और कामगारों के शोषण का दारुण चित्र प्रस्तुत किया गया है। दूसरी ओर **'नो वैकेंसी'** कहानी में लेखक भाई-भतीजावाद प्रथा पर व्यंग्य करते हैं। योग्यता होते हुए भी किसी भी व्यक्ति को बिना किसी जान-पहचान के नौकरी नही मिलती। कहानी का नायक कहता है कि 'दुनिया का सबसे बड़ा काम यही है-नौकरी की खोज।'

अतः कहा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत ने अपनी कहानियों में समाज के यथार्थ को मूलतः विश्वसनीय एवं सार्वभौमिकता तथा पारम्परिक सांस्कृतिक मायताओं के आधार पर समाजशास्त्रीय ढंग से अभिव्यक्त कर पाठकों के सामने वाणी प्रदान किया है। अत: प्रवासियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन सार पूर्वक पत्रों के माध्यम से किया गया है जो कि सार्थक एवं सफल सिद्ध हुए हैं ।

6. ब्रिटिश नीति एवं राजनेताओं के दमनकारी प्रवृति के आधार पर-

अभिमन्यु अनत कृत **'बवंडर बाहर-भीतर'** कहानी संग्रह सन् 2002 में लिखा गया । इसमें चार लघुकथाएँ और तेरह कहानियाँ संकलित है। इस कहानी-संग्रह में मॉरिशस के समाज में उठ रहे बवंडर को उद्घाटित किया गया है। यह बवंडर वहाँ के लोगों को बाहर और भीतर दोनों तरफ से मथ रहा है। 'इतिहास का वर्तमान' कहानी में मजदूरों पर हो रहे अत्याचारों को चित्रित किया गया है। इसमें काले व्यक्ति का गोरी लड़की से प्रेम का भी जिक्र किया गया है। यह प्रेम विवाह में परिणत नही हो पाता। **'वह तीसरी तस्वीर'** कहानी में राजनीति में जातिवाद के बोल-वाले का चित्रण किया गया है। कहानी का नायक 'जीवन' कहता है कि **'मुझे इसलिए प्रधानमंत्री के चुनाव-क्षेत्र से चुनाव लड़ने के लिए चुना गया है, क्योंकि राजनीति में पैसे और दिमाग से कहीं अधिक जरूरत जाति की होती है। इस देश के सभी चुनाव जातिगत समीकरण के आधार पर ही तो जीते जाते हैं।"12** वस्तुत: कहा जा सकता है कि यह प्रवासी अथवा भारतीय समाज की विडम्बना केवल कल न थी बल्कि वर्तमान समय मे नेता वोट बैंक के लिए किसी भी प्रकार का प्रपंच रचने को तैयार रहते हैं।

'आन-रक्षक' कहानी में राजनीति की आड़ मे नेताओं द्वारा किए जा रहे नशीली दवाओं के व्यापार का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। वह कहानियों में पौराणिक पात्रों और कथाओं का भी जिक्र करते हैं जिससे उनके नैतिक मूल्यों एवं मूल्य भावों का तथा धार्मिक ज्ञान का पाठकों को आसानी से अंदाजा हो जाता है कि गिरमिटिया लोगों की क्या दशा रही होगी? तथा उनका जीवन-यापन की स्थिति क्या रही होगी? तथा वे ब्रिटिश नीति से किस तरह शोषित हो रहे होंगे ? आदि बातों का जायजा आसानी से लगाया जा सकता है । व्यक्ति की विशिष्टता उनके नैतिक मूल्यों में छिपी होती है पर उसका सम्मान कहा तक किया जा रहा था एवं उसकी सुरक्षा के लिए कौन कौन से तथ्य लागू किये जा रहे थे ? आदि विशिष्टम बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है ।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत कल्पनाजीवी व्यक्ति नहीं हैं । वे अपनी कहानियों में प्रवास में जा बसे भारवंशियों की स्थिति की और धयान केन्द्रित किया है । साथ प्रवासी समाज में रह रहे व्यक्तियों के प्रति गोरे सरदारों की नीति तथा उनका व्यवहार एवं आचरण आदि बातों का समाजशास्त्रीय ढंग से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है । साथ ही अपने देश की समसामयिक स्थिति का सत्य उद्घाटित करते हैं। इसके अतिरिक्त मॉरिशस के समाज में हो रहे मानवीय पतन को विभिन्न रूपों में पाठकों के सामने लाने में वे प्रयत्नशील हैं, जो कि हमारे समाज की भयावह सत्य है । वे मानव सम्बन्धों को हृदयस्पर्शी रूप में चित्रित कर मानवीय जीवन की विसंगतियों को व्यंग्यात्मक ढंग से सामाजिक सच्चाई को अभिव्यक्त करने में सार्थक सिद्ध हुए हैं । यही कारण है कि अभिमन्यु अनत की कहानियों में गिरमिटिया मजदूरों के जन-जीवन की गाथा तथा सामाजिक गतिविधियों के आधार पर मौरिशसीय समाज तथा प्रवास में रह रहे भारतवंशियों का यानि प्रवासियों का समाजशास्त्रीय परिदृश्य व्यापक एवं विशालकाय पैमाने पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. https://politicalinhindi.blogspot.com/2019/03/what-are-social-definitions-and.html?m=1
2. https://www.rsedublog.in/2018/10/22/meaning-and-definition-of-sociology
3. अग्रवाल डॉ. सतीश चन्द्र, मॉरिशसीय हिन्दी भाषा और साहित्य, अमर प्रकाशन मथुरा, प्रथम संस्करण 2007, पृष्ठ-204
4. अभिमन्यु अनत, ख़ामोशी की चीत्कार, कहानी संग्रह, माथे का टिका, कहानी, पृष्ठ-14-15, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. अभिमन्यु अनत, ख़ामोशी की चीत्कार, कहानी संग्रह, माथे का टिका, कहानी, पृष्ठ-15, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,

6. अभिमन्यु अनत, ख़ामोशी की चीत्कार, कहानी संग्रह, माथे का टिका, कहानी, पृष्ठ-11, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,
7. अभिमन्यु अनत, ख़ामोशी की चीत्कार, कहानी संग्रह, माथे का टिका, कहानी, पृष्ठ-11, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,
8. अभिमन्यु अनत, ख़ामोशी की चीत्कार, कहानी संग्रह, माथे का टिका, कहानी, पृष्ठ-11, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,
9. अरूण विनोदबाला, मॉरिशस की हिन्दी कथा यात्रा, विद्या विहार, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997, पृष्ठ-183
10. अभिमन्यु अनत, वह बीच का आदमी, कहानी संग्रह, नीम के बीच में लड़की, कहानी, पृष्ठ-27
11. अरूण विनोदबाला, मॉरिशस की हिन्दी कथा यात्रा, विद्या विहार नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997, पृष्ठ-183
12. अभिमन्यु अनत, बवंडर बाहर-भीतर, पृष्ठ-47-48

सीमा दास (शोधार्थी)
डॉ.सीमा चंद्रन (शोध-निर्देशिका)
हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
कासरगोड, केरल।